International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

# प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना

**कृष्णामूर्ति एस.के. ज्योथि[1]तथा डॉ. दिग्विजय कुमार शर्मा (डी लिट्)[2]**

**[1]शोधार्थी, ओपीजेएस विश्वविद्यालय, चुरू (राजस्थान)– भारत**
**[2]एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दीविभाग,ओपीजेएस विश्वविद्यालय, चुरू (राजस्थान)– भारत**

## शोध सार

प्रेमचंद एक गहन सामाजिक चेतना के रचनाकार रहे हैं। अपने युग की सम्पूर्ण राजनैतिक–सामाजिक परिस्थितियों को केंद्र में रखते हुए उन्होंने अपनी सामाजिक चेतना को साकार किया। अपनी तीक्ष्ण और धारदार लेखनी के माध्यम से प्रेमचंद ने भारत की शोषित उत्पीड़ित जनता विशेषतः जो किसान और मजदूर के रूप में गाँवों में रहती है, का मर्मस्पर्शी एवं जीवंत चित्ररण प्रस्तुत किया। समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं जनता की दयनीय दशा के विश्लेषण के लिए प्रेमचंद ने एक व्यापक अभियान अपने साहित्य और साहित्येत्तर लेखन के माध्यम से चलाया।'सेवासदन' से :गोदान' तक प्रेमचंद के भीतर क्रन्तिकारी परिवर्तन हो चुके थे। यहाँ तक आते–आते प्रेमचंद का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद यथर्थोन्मुख आदर्शवाद बन गया था। प्रेमचंद जी ने महिलाओं से संबन्धित पारिवारिक और सामाजिक रीतिरिवाजों व समस्याओं को भी अपने उपन्यासों में विशेष स्थान दिया है। इनके उपन्यासों में सामाजिक चेतना, राजनीतिक चेतना, व्यक्ति चेतना, समाज कल्याण,यथार्थ की अनुभूति,आदर्श की कल्पना,आंतरिक मनोमंथन एवं भावन्द सभी कुछ मिल जाता है।

**कुंजी शब्द** : मानवतावाद, अस्पृश्यता, यथार्थवाद, चेतना, सामाजिक चेतना, राजनीतिक चेतना, साहित्य, जागृति और प्रेम के साहित्य में सामाजिक चेतना।

## भूमिका

हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद के आगमन से पूर्व हिंदी उपन्यास–कथा साहित्यतिल्सिम और ऐय्यरी के मकड़ जाल में उलझा हुआ था। हिंदी में उपन्यास का शुभारंभ तो भारतेन्दु जी के समय से ही हो गया था। लेकिन हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास कौन–सा है, इसे लेकर विद्वानों का मत बंटा हुआ है। इस बारे में दो उपन्यासों का नाम लिया जाता है, प्रथम सन् 1877 में प्रकाशित श्रद्धाराम फुलौरी कृत 'भाग्यवती' और दूसरा 1882 में प्रकाशित लाला श्री निवास द्वारा कृत 'परीक्षा गुरु'। अधिकतर विद्वान 'परीक्षा गुरू' को ही सर्वप्रथम

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मौलिक उपन्यास मानते है। जिसमे शिक्षा के साथ–साथ नैतिक आदर्श और राष्ट्र प्रेम की भावना का निरूपण हुआ है। इसी समय देवकीन्दन खत्री के उपन्यासों की बड़ी लोकप्रियता रही। ये उपन्यास तिल्सिम और ऐय्यरी से संबंधित थे। प्रेमचंद पूर्व सभी लेखकों के उपन्यास में तिल्सिम और ऐय्यरी देखने को मिली, इन उपन्यासों का सृजन मनोरंजन को केंद्र में रखकर किया गया। लेकिन करूण हृदय के धनी प्रेमचंद जी ने मनोरंजन को साहित्य का उद्देश्य नहीं माना। उन्होंने स्वयं लिखा है––'हम साहित्य को मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमे चित्रण की स्वाधीनता का भाव हो,सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो,जीवन की सच्चाई का प्रकाश हो,जो हममें गति,संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलावे नहीं।' उनके द्वारा साहित्य को बिकारू वस्तु माने के स्थान पर मर्मस्पर्शी विधा मानने के कारण कारण है की उनके के आते ही हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में स्थिरता आई, उपन्यास की रुपरेखा निश्चित हुई।

प्रेमचंद के मौलिक उपन्यासों में सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्ररण प्रस्तुत किया गया। साहित्यकार कभी भी अपने समय की युगीन परिस्थितियों से अछूता नहीं रह सकता है। इसी प्रकार प्रेमचंद की रचनाओं में उस समय की विकट और गंभीर परिस्थितियों का व्यापक प्रभाव पड़ा। प्रेमचंद्र के समय एक तरह तो समाज विशेषकर ग्रामीण समाज महाजनों एवं धार्मिक और सामाजिक रुढ़ियों की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, वहीं दूसरी और बड़ी तेजी के साथ राष्ट्रीय आंदोलन का उत्थान हो रहा था, प्रेमचंद ने दोनों ही परिस्थितियों से संतुलन बैठाकर अपने लेखन को धार देनी शुरू की।

उनके लेखन में सामाजिक चेतना व्यापक स्तर पर थी। प्रेमचंद जी ने मानव जीवन की विषमताओं का कारण अर्थ पर आधारित सामाजिक व्यवस्थाको माना है। यही कारण है की प्रेमचंद के अधिकांश उपन्यासों में आर्थिक परिस्थियाँ ही जीवन की विषमता का कारण हुई। 'सुमन' (सेवासदन) का विवाह धन के अभाव में एक निर्धन व्यक्ति के साथ हो गया। सुमन पति की परिस्थियों को अपने अनुकूल न बना सकी। उसे जीवन में ऐसी विषम परिस्थियों का सामना करना पड़ा कि उसे मजबूरी वश वेश्यावृति अपनानी पडी।

इसी प्रकार धन के अभाव में 'निर्मला' विवाह अधेड़ उम्र के वकील से कर दिया जाता है। जीवन और उत्साह से हीन वकील साहब असंभवित आशंका के शिकार हो जाते हैं। परिणामस्वरूप वे अपनी पहली पत्नी के पुत्र का अपनी नई पत्नी से यौन संबंध की कल्पना कर बैठते हैं। 'निर्मला जीवन भर अपने पति की निर्मूल धारणा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

को असत्य सिद्ध करने के लिए प्रयास करती रही।अंत में घुट–घुटकर उसे अपने जीवन की बलि देनी पड़ी। बेमेल विवाह का मूल कारण समाज प्रचलित दहेज प्रथा है। सेवासदन,वरदान गोदान निर्मला और गबन में प्रेमचंद ने दहेज की विकृतियों का चित्रण किया।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में जन्म के आधार पर ऊंच–नीच की भावना का खंडन किया है। 'कर्मभूमि' में अछूतों के मंदिर प्रवेश की समस्या का प्रेमचंद ने व्यवहारिक समाधान प्रस्तुत किया। अस्पृश्यता के अतिरिक्त अछूतों के सामाजिक उथान और विकास पर भी 'कर्मभूमि' में विचार किया। ढोल मरने वाले चमारों के गाँव में पहुंच कर 'अमरकांत' उनमें जाग्रति उत्पन्न करता है तथा उनको सामाजिक आंदोलन के स्तर पर उठाकर राष्ट्रीय जीवन का परिचय भी उन्हें करता है। इस प्रकार प्रेमचंद ने अछूतोद्धार और अछूतों की सामाजिक स्थिति के संबंध में ठोस विचार प्रस्तुत किये।

'गोदान' में तो कृषक जीवन का संजीव चित्ररण प्रस्तुत किया गया है। कृषक जीवन ऐसा सक्षात् वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। इसमें किसान के शोषण को चित्रित किया गया है। उपन्यास में दिखाया गया है कि किसान अन्य के लिए तो अन्नदाता है, परंतु उसे उसे स्वयं भरपेट भोजन नसीब नहीं होता। जीवनपर्यंत अपनी–अपनी छोटी इच्छाओं की पूर्ति के लिए भी उसे संघर्ष करना पड़ता है।

प्रेमचंद ने 'प्रतिज्ञा' उपन्यास में विधवा विवाह की समस्या को उठाया है। इसी प्रकार गोदान उपन्यास में उन्होंने 'मालती' के संदर्भ में पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण की समस्या का विरोध किया है। प्रेमचंद मानते थे कि ग्रामीण समाज को जागरूक किए बिना स्वतंत्रता नहीं प्राप्त की जा सकती है। यही कारण था जिसके चलते प्रेमचंद ने अपने साहित्य में ग्रामीण समाज का चित्ररण किया।

'प्रेमाश्रम' उपन्यास में जमींदार और किसानों के बीच होने वाले संघर्ष को चित्ररित किया। इस उपन्यास में उन्होंने उस समय भारत में व्याप्त जमींदारी व्यवस्था का विभत्स रूप प्रस्तुत किया। इस उपन्यास के प्रमख पात्र 'बलराज' तत्कालीन जमींदारी व्यवस्था का विरोध किया। वह अफसरों की धांधली के विरुद्ध स्पष्ट कह बैठता है –'मनोहर ने अभी जवाब दिया था की बलराज बोल उठा, मेरी भैंसे बहुत दुधारु है,मन – भर दूध देती है। लेकिन बेगार के नाम पर छटांक– भर भी न देगी।

'गोदान' के राय साहब किसानों से सहानुभूति तो रखते हैं, परंतु बेगार लेने और नजराना वसूल करने में वे

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

किन्चित संकोच नहीं करते। प्रेमचंद ने जमींदार और अधिकारी वर्ग के विरुद्ध जिस संघर्ष का वर्णन किया, उसमें किसानों को दो विचारधाराओं में विभाजित किया है। एक तरह तो प्राचीन परम्परा को माने वाले किसान होरी तथा मनोहर हैं तथा दूसरी तरह गोबर और बलराज जैसे प्रतिवादी विचार वाले किसान हैं, जो शोषण का विरोध करते हैं।

यूरोप में तेजी से औद्योगिक क्रांति का विकास हुआ है, जिससे भारत भी अछूता न रहा, परंतु प्रेमचंद ने इस औद्योगिकरण का पुरजोर विरोध किया। 'रंगभूमि' की रचना उन्होने इसी को आधार बना कर दी।सूरदास की पाँच बीघे भूमि को केंद्र बनाकर उसके सम्पूर्ण जीवन को औद्यौगिकरण के विरुद्ध संघर्षरत चित्रित किया गया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में औद्योगिक क्रांति के पश्चात में समाज में पनपे नव धानाढ्य वर्ग पूंजीपति वर्ग के कारनामों को भी अपनी लेखन के माध्यम से उजाकर करने का प्रयास किया है। औद्योगिकरण के बाद समाज पूंजीपति और श्रमिक दो वर्गों में विभाजित हो गया। प्रेमचंद ने इस वर्गभेद को भी अपने साहित्य में दर्शाने का प्रयास किया है। 'गोदान' में खन्ना पूंजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, तो गोबर श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है और उसकी सक्रियता को हड़ताल के रुप में प्रस्तुत किया है।

प्रेमचंद के साहित्य में वेश्या समस्या को भी प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने वेश्याओं के प्रति पूर्ण सहानुभूति प्रस्तुत की। उनका मानना था कि वेश्याएं घृणा की पात्रा नहीं है, घृणा तो उन परिस्थितियों तथा रीतिरिवाजों से करनी चाहिए, जिनके कारण नारी अबला और असहाय बनकर बनकर इस कुतिसत कार्य को करने के लिए मजबूर होती है। इस समस्या को उन्होने अपने उपन्यास 'सेवासदन' में बखूबी उठाया है।'सेवासदन' की सुमन धनाभाव,अनमेल विवाह,पति की संकीर्णता आदि के कारण वेश्या बनी।

हिन्दी–कथा साहित्य में प्रेमचन्द प्रगतिशील दृष्टि के सर्जक हैं। उन्होंने अपने 12 उपन्यासों–प्रेमा, वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, प्रेमचन्द प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गोदान, मंगलसूत्र(अपूर्ण) और 300 कहानियों के माध्यम से वे मनुष्य और समाज की सदाशयता एवं मंगल भावना के पोषक रहे हैं। विसंगतियों पर प्रहार, सुधार की आशा तथा मानवीय दृष्टिकोण उन्हें सही अर्थों में 'कलम का सिपाही' बनाता है। उस समय के समाज में व्याप्त विसंगतियां अर्थात् जमींदारों, महाजनों के चंगुल से मुक्ति की छटपटाहट लिए किसानों का मूक विद्रोह, नौकरीपेशा मध्यवर्ग की अल्पवेतन में दिखावे की प्रवृत्ति व आत्मरक्षा के लिए आजीवन प्रयास, अन्धसंस्कार, अछूतों की दरिद्रता–तड़प, क्रान्तिकारी देशभक्तों का आक्रोश, मानवीय

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

विश्वासों के विरुद्ध धर्म के नाम पर ढोंग, न्याय के नाम पर नीतिकुशल घूसखोर विचारकों के कुचक्र, विदेशी शासन के दोष– यह सब साहित्य लेखन के विषय बने। अपने समय के ज्ञान–विज्ञान, विचार–दिशाओं से प्रेमचन्द पूरी तरह परिचित मालूम होते हैं। प्रेमचन्द जिस रचना पीढ़ी के लेखक थे, उसके बहुत कम लेखक इतने स्पष्ट तथा प्रखर विचारवाले मिलते हैं।

प्रेमचन्द गरीबी से परिचित थे, गरीब परिवार ही उनका जन्म और जीवन–स्रोत था–अर्थात् वे गरीबी के बीच जीने के आदी थे। अपने इस निजी अनुभव को उन्होंने अपनी रचनाओं में विस्तृत धरातल पर प्रस्तुत किया। वे स्वयं जीवन–भर गरीबी से लड़ते रहे। उनकी रचनाओं में यह लड़ाई बड़े पैमाने पर आकर देश की आजादी की लड़ाई में बदल गई। यही प्रेमचन्द के व्यक्तित्व का निर्वैयक्तिता में परिवर्तित होने की प्रक्रिया है। वह रूपांतर प्रेमचन्द के व्यक्तित्व को सांस्कृतिक गरिमा प्रदान करता है। उन्होंने जिस वर्ग के विषय में लेखनी चलाई, अपने व्यक्तित्व की गरिमा के अनुकूल ही उसे अंकित किया। सरकारी नौकरी में रहकर इन्होंने उसके वातावरण का स्वयं अनुभव कर लिया था, अतः अपनी रचनाओं में वे अपने अनुभूत सत्य की सच्ची तस्वीर खींच सके। अपने समय के यथार्थ को चित्रित करने की 'विलक्षणता' प्रेमचन्द में विद्यमान थी। वर्ग संघर्ष तथा समान वर्गों की परस्परिक सहानुभूति अंकित कर प्रेमचन्द ने जन–आंदोलन की सुदृढ़ पृष्ठभूमि तैयार की थी। इसमें संदेह नहीं है कि प्रेमचन्द ने अपने समय के जन–मानस की कलात्मक तस्वीर को अपने कथा–साहित्य में चित्रित किया है। जन–मानस की इस तस्वीर के उपकरण घटनाएँ ही नहीं हैं, अपितु घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में प्रवाहित वह जीवन भी है, जो अनेक स्तरों पर जीने और मरने के संघर्ष में जूझ रहा है।

प्रेमचन्द आस्थावादी उपन्यासकार है। अतः वे रंगभूमि में कहते हैं जीवन एक खेल है–'इसे खेलो, हारो तो घबराओ नहीं, जीतो तो घमंड में चूर न हो।'उन्हें अपने सामाजिक परिवेश का अनुभव अर्जित। उन्होंने निजी जीवन में पारिवारिक विसंगतियाँ, शिक्षा की कठिनाइयाँ, धनाभाव, अव्यस्थित पारिवारिक जीवन के प्रसंग, नौकरी से परित्याग तथा फिल्मी जीवन के कटु अनुभवों में उन्होंने जीवन की सचाई का गहनतापूर्वक पूर्वक प्रेक्षण किया।वह अपनी ही स्थितियों की परिधि में घूमते नहीं रहते, वरन् अपने व्यक्तिगत सन्दर्भ से उठकर विस्तीर्ण प्रसंग से जुड़ने की प्रक्रिया को अपनाते हैं। उनके कथा–साहित्य में समाज के प्रत्येक वर्ग तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से पात्रों का चयन हुआ है। उसमें राजा भी हैं और भिखारी भी, पूँजीपति भी हैं और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

श्रमिक भी, नौकरी–पेशा भी हैं और कृषक भी, पंडे–पुजारी भी हैं और कर्मचारी भी, कुलीन भी हैं और अछूत भी। प्रेमचन्द की विशेषता रही है कि सर्वांगीण जीवन की झाँकी देने के लिए पात्र–बाहुल्य के बीच में कुछ ऐसे पात्रों का सृजन कर देते हैं, जो भीड़ में तुरंत दिखाई पड़ जाते हैं और पाठक के मनः पटल पर अपनी अमिट स्मृति छोड़ जाते हैं। जैसे सेवासदन की 'सुमन' रंगभूमि का 'सूरदास', गोदान का 'होरी'।

प्रेमचन्द को किसी एक विचारधारा में बांधा नहीं रखा जा सकता है। कहीं उनमें समाजवादी–साम्यवादी भावना पनपती दिखायी देती है तो कहीं उन पर गाँधीवादी विचारधारा हावी है। प्रेमचन्द साहित्य को जीवन की आलोचना मानते हैं और साहित्य का केन्द्रबिन्दु मानव जीवन को मानते हैं। प्रेमचन्द का साहित्य किसी विदेशीपन से परिचालित या प्रभावित नहीं अपितु विशुद्ध भारतीय संस्कृति की व्यापकता को सहेजे हुए है।

**निष्कर्षः**

प्रेमचंद ने साहित्य को अतिशय कल्पना प्रवणता से मुक्ति दिलाकर सामाजिक यथार्थ के ठोस धरातल पर प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयास किया। उन्होंने अपने उपन्यासों में युगीन समस्याओं को व्यापक रूप से अपनाया है। इस प्रकार प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में सम्पूर्ण युग के स्पंदन को ध्वनित किया है। लेकिन एक जगह प्रेमचंद जी से चूक हो गई वह है उनकी पितृसतात्मक व्यवस्था से पोषित स्त्री विषयक सोच। उन्होंने 'गोदान' में मेहता के माध्यम से अपने स्त्री संबंधी विचारों को प्रकट किया है। प्रेमचंद जी की मान्यतया थी कि यदि पुरुष में स्त्रियोचित गुण आ जाएं तो वह देवता बन सकता है। दूसरी तरफ यदि नारी में पुरषोचित गुण आ जाएं तो वह कुलटा बन जाती है। अपने इस तथ्य को उन्होंने 'गोदान' में मालती के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। मालती शिक्षित,आत्मनिर्भर,निर्णय लेने में समर्थ व स्वछंद विचारों वाली स्त्री है, जिसे प्रेमचंद जी ने तितली व मधुमखी की उपमा दी है। मेरा मानना है कि यदि अत्मनिर्भरता,निडरता,साहस,निर्णयशीलता आदि गुणों का विकास होना नारी मुक्ति के लिए शुभ संकेत है जो वर्षों से पीड़ित व शोषित रही है। यदि हम इस एक बिंदु को अलग कर दें तो निश्चय ही प्रेमचंद जी की सामाजिक चेतना फलक विस्तृत था।

अपने वर्तमान के यथार्थ, वैचारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक संस्कार और विगत सांस्कृतिक कसाव के बीच से प्रेमचन्द ने लेखन के लिए जिस अनुभव को चुना था, वह अनुभव अपने आप में समाज के नवीन संस्कार का एक चयन–आयाम बन जाता है। यह चयन–दृष्टि ही वह कलादृष्टि है, जो प्रेमन्द के यथार्थवादी दृष्टिकोण से

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

जुड़ती है। यह यथार्थ–सत्य ही कला–सत्य के रूप में प्रेमचन्द की रचनाओं में उभरा है।हिन्दी में प्रेमचन्द ही ऐसे समर्थ कथाकार हुए जिनकी वाणी उत्तर भारत से सुदूर दक्षिण क्षेत्रों का स्पर्श करती है। इतना ही नहीं, बल्कि देशकाल की संकुचित परिधि का अतिक्रमण कर इनका साहित्य अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं को लांघ कर विश्व मानवता का आलिंगन करता है, जो एक महान् उपलब्धि है। सीधी, सरल, आम जनता की भाषा में रची उनकी रचनाओं के माध्यम से आम आदमी की समस्याओं को उन्होंने इतनी गहनता एवं सापेक्ष–दृष्टि से पहचाना कि उनका जीवन–दर्शन आज भी प्रासांगिक जान पड़ता है।

## संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद स्मृति : अमृत राय, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1959
2. प्रेमचंद के निबंध साहित्य में सामाजिक चेतना, अर्चना जैन
3. प्रेमचंद्र युगीन भारतीय समाज, डॉ. मोहन कुमार
4. कथाकार प्रेमचंद : जितेंद्रनाथ पाठक, सरस्वती मंदिर, बनारस 1954
5. कलम का मजदूर : मदन गोपाल, राजकमल प्रकाशन, 1958
6. कलाकार प्रेमचंद : डॉ. रामरत्न भटनागर, यूनिबर्सल प्रेस, इलाहाबाद
7. कहानी कला और प्रेमचंद : श्रीमती शर्मा, विद्यामंदिर काशी,
8. प्रेमचंद : रामरत्न भटनागर, किताब महल, इलाहाबाद, 1948
9. प्रेमचंद्र : एक विवेचन : डॉ. इंदनाथ मदान राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. प्रेमचंद्र और उनका युगः डॉ. रामविलास शर्मा, मेहरचंद मुंशी दिल्ली
11. प्रेमचंद्र और उनका साहित्य : डॉ. श्रीमती शीला गुप्त, साहित्य भवन प्रा.लि. इलाहाबाद, 1972
12. प्रेमचंद कलम का सिपाही : अमतृ राय, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद,
13. प्रेमचंद्र कला और कृतित्व : डॉ प्रेम नारायण टंडन, पब्लिसिंग हाउस, प्रयाग,
14. प्रेमचंद्र के साहित्य सिद्धांत : डॉ. नरेंद्र कोहली, अशोक प्रकाशन, दिल्ली
15. प्रेमचंद चिंतन और कला : डॉ इंद्रनाथ मदान, सरस्वती प्रेस, बनारस
16. प्रेमचंद व्यक्तित्व और साहित्यकार : मंमथनाथ गुप्त, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद,